आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत
वन-वर्धन में समुदाय की भूमिका
विषय पर संगोष्ठी
दिनांक :12.01.2022
स्थल : अलंकेल, तोरपा, खूंटी
वन उत्पादकता संस्थान, रांची
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निर्देश पर वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा दिनांक 12.01.2022 को खूंटी के अलंकेल ग्राम में वन-वर्धन में समुदाय की भूमिका विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमे लगभग 70 ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

ग्राम सभा अध्यक्ष श्री महावीर सिंह के स्वागतोपरांत ग्रामीण बालिकाओं द्वारा संस्थान के दल का स्वागत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री बी.डी.पंडित ने ग्रामीणों का अभिवादन किया एवं आज के कार्यक्रम का परिचय दिया एवं ग्रामीणों के स्वागत एवं उत्साहपूर्ण उपस्तिथि के लिए आभार व्यक्त किया।

श्री एस.एन.वैद्य ने ग्रामीणों को वन-वर्धन की आवश्यकता एवं वन के कारण समाज को हो रहे परेशानियों से अवगत कराया। उन्होने बताया कि आज भोजन से ज्यादा आवश्यक वानिकी हो गया है। कल तक हमारे चारो ओर जंगल दिखाई पड़ते थे लेकिन आज वीरान नजर आता है। हम सबको मिलकर वन-वर्धन के लिए काम करना होगा।

श्री सुभाष चंद्र सोनकर ने ग्रामीणों को समझाया कि किस तरह वानिकी को बढ़ावा देना है। 33% वन आवश्यक है जबकि आज 29% के करीब है।

श्री निसार आलम ने भी वन-वर्धन के ल्लिए बांस का पौधरोपण करने पर बल दिया।

श्री सूरज कुमार ने बांस के उपयोग एवं वानिकी के लिए गुणवत्तापूर्ण बीज के लिए विभिन्न कम्पनियों के विषय में बताया।

बी.एल.ओं. श्री तुलसी ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए वानिकी के लिए दीन-दयाल उपाध्याय ग्राम स्वावलंबन योजना के तहत चलाए जा रहे कार्यों के विषय में बताया। उन्होंने मिलजुलकर वन-वर्धन के लिए कार्य करने का आह्वान किया।

वन-वर्धन में समुदाय की भूमिका पर अपना विचार व्यक्त करते हुए श्री बी.डी.पंडित ने देश और राज्य के परिपेक्ष में वनों के स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि मानव की मूल-भूत आवश्यकताओं भोजन, वस्त्र, आवास में वन से प्राप्त संसाधनों की हिस्सेदारी सर्वाधिक है। खास कर मुफ्त में मानव जीवन के लिए अतिआवश्यक हवा और जल वन के बिना प्राप्त ही नही हो सकता। ओजोन परत की चर्चा करते हुए उसके दुष्परिणाम से अवगत कराया और बताया कि इसकी भरपाई वनाच्छादन से ही संभव है। वन कार्बन का शोषक है और आक्सीजन का उत्सर्जक है। श्री पंडित ने वन-वर्धन में समुदाय की भूमिका का उल्लेख करते हुए बताया कि व्यक्ति विशेष से वन के सुरक्षा संभव नही है। समुदाय मिलकर यदि वन-वर्धन करे तो उसकी सुरक्षा एवं प्रबंधन आसान हो जाता है तथा उत्तरदायित्व भी सभी की हो जाती है। इमली, कटहल, करंज, लाह पोषक वृक्ष, तसर उत्पादक वृक्ष, गोंद आधारित वृक्ष आदि लगाकर आमदनी भी प्राप्त कर सकते है तथा वन-वर्धन में सहयोग भी कर सकते है।

श्री महावीर सिह ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए संस्थान के इस पहल की सराहना की।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री एस.ए.वैद्य, श्री सुभाष चंद्र सोनकर, श्री निसार आलम, श्री बी.डी.पंडित एवं सूरज कुमार का सराहनीय योगदान रहा।

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

Win2PDF®

This document was created with the Win2PDF “print to PDF” printer available at
http://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

http://www.win2pdf.com/purchase/